Dr. Jaya
Deptt. of Socio
B.A Part-2 (Hons).
Paper-4, Unit-7
Lecture Series-6
Date:- 03/07/2020

Topic:- Different types of Sampling

Merit of ~~Sam~~ statified sampling

1) इसके द्वारा सैंपल निकालने वाले को सैंपल के चुनाव में अधिक नियंत्रण प्राप्त हो जाता है। दैव निदर्शन में यद्यपि प्रत्येक इकाई के चुने जाने की समान संभावना रहती है परंतु कभी-कभी महत्वपूर्ण वर्ग छूट जाते हैं। ऐसा विशेषकर उस समय होता है जबकि वर्ग में इकाइयों की संख्या कम हो। वर्गीय निदर्शन द्वारा यह कठिनाई दूर हो जाती है तथा प्रत्येक वर्ग की इकाइयों का प्रतिनिधित्व अवश्य प्राप्त होता है।

2) यदि वर्गीकरण उचित रूप से किया गया है, तो प्रतिनिधि सैंपल का चुनाव अपेक्षाकृत थोड़ी इकाइयों में हो सकता है। इसके विपरीत दैव निदर्शन में प्रतिनिधित्व का गुण तभी प्राप्त होगा, जब पर्याप्त संख्या में इकाइयाँ चुनी जायेंगी।

3) इकाइयों का प्रतिस्थापन अत्यंत सुविधापूर्वक हो सकता है। यदि आरंभिक सैंपल का कोई व्यक्ति ऐसा है जिससे किसी कारण संपर्क नहीं हो सकता है, तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का दूसरा व्यक्ति चुना जा सकता है तथा सैंपल के प्रतिनिधित्वपूर्ण होने

Scanned with CamScanner

में कोई अंतर नहीं पड़ता।

1) वर्गीकरण द्वारा सैंपल इस प्रकार भी चुना जा सकता है कि सैंपल की अधिकांश इकाइयाँ भौगोलिक रूप से केन्द्रित हों ~~से समय तथा धन की बचत~~ दैव निदर्शन में इस प्रकार का कोई नियंत्रण नहीं हो सकता तथा चुनी हुई इकाइयाँ दूर-दूर तक बिखरी हो सकती हैं। इकाइयों के भौगोलिक रूप से केन्द्रित होने से समय तथा धन की बचत होती है।

Demerit of statified sampling

1) यदि अनुचित अथवा अनुपयुक्त वर्गीकरण किया गया है तो सैंपल में Bias उत्पन्न हो सकती है तथा चुने हुए सैंपल में किसी विशेष वर्ग की इकाइयाँ बहुत अधिक या बहुत कम हो सकती हैं। इस प्रकार उसका प्रतिनिधित्वपूर्ण होने का गुण नष्ट हो जाता है।

2) प्रतिनिधित्वपूर्ण होने के लिए सैंपल का सानुपातिक होना आवश्यक है दैव निदर्शन में यह अनुपात अपने आप प्राप्त हो जाता है। वर्गीय निदर्शन में इसके लिए निश्चित प्रयत्न करना पड़ता है। यदि विभिन्न वर्गों के आकार में पर्याप्त भिन्नता है, तो इस प्रकार का सामाजिक गुण लाने में अत्यंत कठिनाई पड़ती है तथा चुनाव करने वाले की व्यक्तिगत रुचि का प्रभाव पड़ सकता है।

3) यदि वर्गों से चुनाव असानुपातिक आधार पर किया गया है तो बाद में भार का प्रयोग करना पड़ता है। भार का प्रयोग करने में Personal Bias से प्रभावित होता है तथा अनुचित भार प्रदान करने से सैंपल प्रतिनिधित्वहीन बन जाता है।

4) वर्गों के बन जाने के बाद भी एक ही इकाई को विशेष

वर्गों में रखने में कठिनाई पड़ सकती है। यदि वर्ग पूर्णतया स्पष्ट नहीं है तो यह निश्चय करना बड़ा कठिन हो जाता है कि किस इकाई को किस वर्ग में रखा जाय।

4) Quota Sampling — यह वर्गीय निदर्शन का ही एक रूप है। इस विधि में सबसे पहले समग्र को कई वर्गों में विभाजित किया जाता है। इसके पश्चात् प्रत्येक वर्ग से चुनी जाने वाली इकाइयों की संख्या निर्धारित की जाती है। यह निश्चित संख्या Quota कहलाती है। गणकों को पूर्ण इस बात का अधिकार दे दिया जाता है कि वे प्रत्येक वर्ग से अपनी इच्छानुसार निश्चित संख्या में इकाइयाँ छाँट लें।

ex :- मान लो 500 परिवारों का एक सैंपल छाँटना है। किन घरों से सैंपल लेना है इसका निर्णय कर दिया जाता है तथा कार्यकर्ताओं से कह दिया जायेगा कि प्रत्येक घर से एक परिवार इच्छानुसार छाँट लो।

Scanned with CamScanner